# शिक्षा – एक सतत् प्रक्रिया

❑ प्रतिभा शर्मा

शिक्षक, शिक्षा और समाज पर इस बार संवाद में हम दो लगभग परस्पर विरोधी दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं । एक मत शिक्षा की परंपरागत धारणा से अनुप्राणित है जो यह मान रहा है कि मौजूदा शैक्षिक समस्याओं की जड़ में परंपरा से विचलन है । जबकि दूसरा पक्ष मान रहा है कि मौजूदा शिक्षा उस परंपरागत मूल्य संरचना को ढो रही है जो यथास्थिति बनाये रखने के उपक्रम का हिस्सा है । यह मत पुराने से मुक्ति में शिक्षा का नया रास्ता देख रहा है । यह एक सुखद संयोग है कि दोनों लोग शिक्षा से जमीनी स्तर पर जुड़े हैं ।

शिक्षा मनुष्य के साथ जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जिस दिन से वह इस संसार में प्रवेश करता है, उसी दिन से अपने आस-पास के लोगों से, आस-पास के वातावरण से जाने-अनजाने ही शिक्षा ग्रहण करने लगता है । अर्थात उसी दिन से उसके व्यक्तित्व के विकास का प्रथम चरण प्रारंभ हो जाता है । पग-पग पर मानव विविध माध्यमों से जो कुछ ग्रहण करता है और उसे अपने व्यक्तित्व में ढालता है । तो वह माध्यम शिक्षा ही है । वह शिक्षा ही है जो मनुष्य के विवेक को जागृत करती है और उसके व्यक्तित्व को ढालती है । जो मनुष्य के विवेक को जागृत करती है और उसे अच्छे बुरे में भेद बतलाकर पशु जगत से पृथक करती है । जहां पशु अपना संपूर्ण जीवन सिर्फ संतोत्पत्ति और उदरपूर्ति में लगा देता है, वहीं मनुष्य का जीवन केवल यहीं तक सीमित न रहकर उच्च आदर्शों तक जाता है जिनका आरंभ मानवीय व्यक्तित्व में शिक्षा के द्वारा ही होता है । विवेक, त्याग, धैर्य, सहनशीलता आदि ऐसे आदर्श हैं जो मानव को एक संपूर्ण मनुष्य बनाते हैं । ये आदर्श ही व्यक्ति में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की धारा को प्रवाहित करते हैं और ये आदर्श केवल शिक्षा से ही प्राप्त हो सकते हैं । शिक्षा एक ऐसा आयाम है जो मनुष्य को उसका संपूर्ण मनुष्यत्व प्रदान करती है ।

प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षा के स्वास्थ्य में अनेक उतार-चढ़ाव आये हैं । प्राचीनकाल में महानगुरूओं ने अपने शिष्यों को जो शिक्षा दी, शिक्षा को जिस रूप में परिभाषित किया, उसका सारतत्व यही है कि वही शिक्षा उत्तम है जो मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करना सिखाये, अंहिसा का मार्ग दिखाये, शांति का संदेश दे, राष्ट्र के प्रति, मनुष्य के प्रति, आदर और सम्मान की भावना जाग्रत करे। शिक्षा की ये विशेषतायें, ये गुण तो केवल उदाहरण मात्र के लिए हैं । शिक्षा के गुणों की अगर व्याख्या की जाने लगे तो शायद कहने के लिये शब्द ही रहें । लेकिन ये सभी तथ्य सद्शिक्षा के बारे में हैं । शिक्षा का तात्पर्य ही है सीख लेकिन अच्छी सीख । जिस सीख के माध्यम से व्यक्ति स्वयं तो आलोकित हो ही साथ ही उस प्रकाश से संपूर्ण जगत को आलोकित करें ।

किन्तु क्या आज की शिक्षा अपने मूल्यों पर खरी उतर रही है ? क्या आज की शिक्षा का उद्देश्य वही है, जो पूर्व में हमारे शिक्षाविदों ने निर्धारित किया था ? क्या शिक्षा आज बालक के व्यक्तित्व में अपना योगदान दे रही है ? शायद नहीं । यही कारण है कि आज मनुष्य इन्सानियत के मापदण्ड पर खरा नहीं उतर रहा है । आज हमारी शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ एक ही रह गया है - भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति।

हम शिक्षा के नाम पर मात्र डिग्री हासिल करके अपनी आवश्यकताओं, अपने स्वार्थों की सिद्धी करना चाहते हैं । उसके लिए अगर हमें अपनी नैतिकता, अपने आदर्श ताक में रखकर किसी का बुरा भी करना पड़े तो उससे हम झिझकते नहीं । यही आज की शिक्षा है जो विद्यालयों महाविद्यालयों और हमारे परिवारों से हमें मिल रही है । इस शिक्षा से हम स्वयं को उन्नति के शिखर पर पहुचांना चाहते हैं । क्या रक्त-रंजित, द्वेषभाव से ग्रसित, राजनीति में लिप्त हमारी यह पद्धति हमें वास्तव में इक्कीसवीं सदी के द्वार पर ले जायेगी ? मुझे तो यह सब असंभव सा प्रतीत होता है । जो शिक्षा अपने सांस्कृतिक मूल्यों से विरत हो चुकी है, वह जो उसका मूल है, वह स्वयं ही अधूरी रहेगी तो देश का क्या विकास कर पायेगी ? जब तक शिक्षा सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों व आदर्शों से बालक को परिचित नहीं करायेगी, जब तक बालक में स्वार्थ को छोड़ परमार्थ का ज्ञान नहीं करायेगी, तब तक क्या देश कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ पायेगा ? शिक्षा अपने इन कर्तव्यों से आज कितनों का पालन कर रही है? यदि नहीं कर रही है तो उसका कारण क्या है ? इसके कारणों का विश्लेषण अति आवश्यक है। यदि हमें स्वयं को पूर्ण बनाना है और राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाना है ।

शिक्षा का प्रारंभ सर्वप्रथम घर से, परिवार से होता है । माता-पिता बालक को जैसा बनाना चाहते हैं, वैसे ही संस्कार उसमें